Poems That Touch My Heart

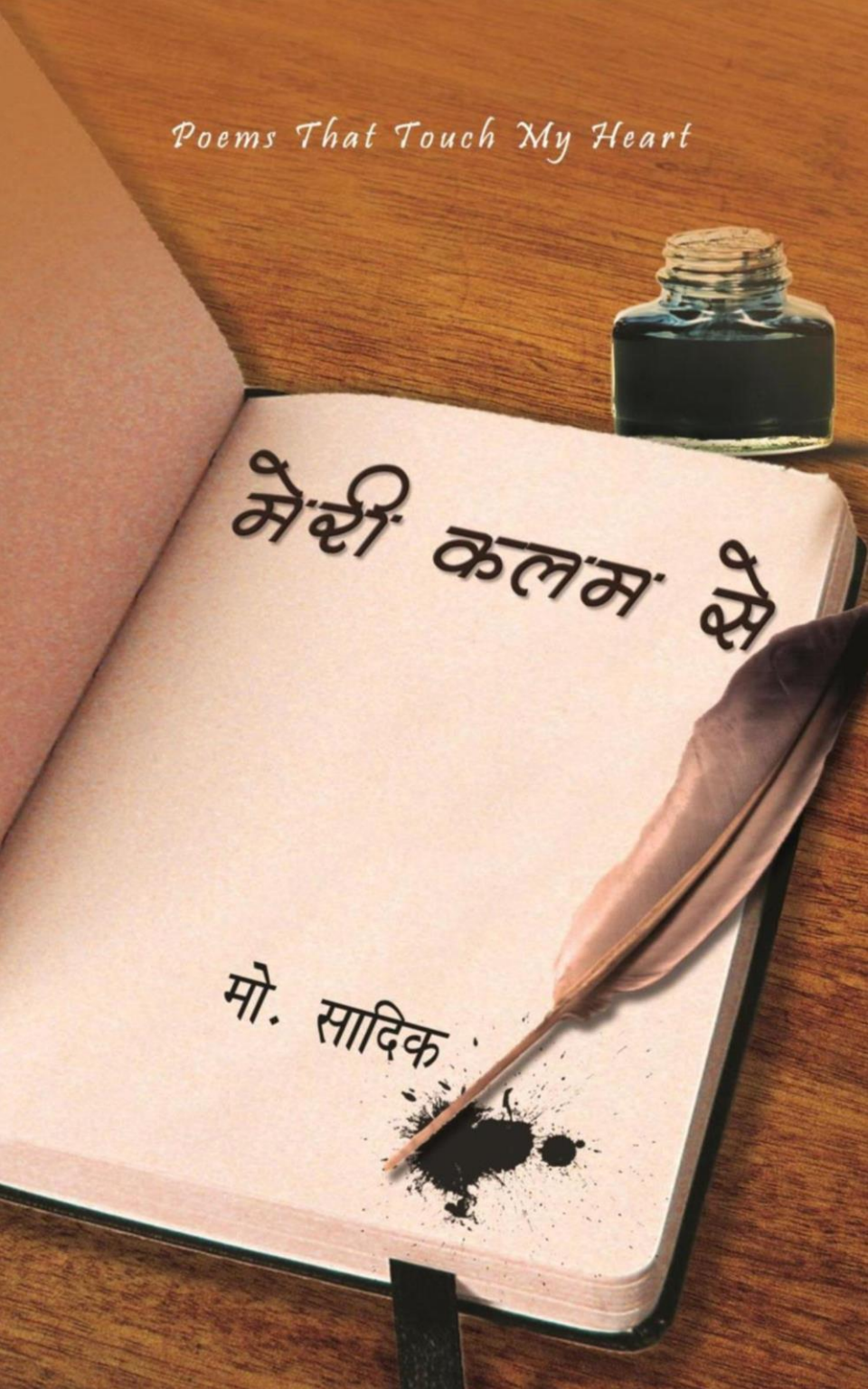

मेरी कलम से

मो. सादिक

मेरी कलम से

Publishing-in-support-of,

FSP Media Publications

RZ 94, Sector - 6, Dwarka, New Delhi - 110075
Shubham Vihar, Mangla, Bilaspur, Chhattisgarh - 495001

Website: *www.fspmedia.in*

© Copyright, Author

All rights reserved. No part of this book may be reproduced, stored in a retrieval system, or transmitted, in any form by any means, electronic, mechanical, magnetic, optical, chemical, manual, photocopying, recording or otherwise, without the prior written consent of its writer.

ISBN: 978-93-6026-885-5

Price: ₹ 225.00

The opinions/ contents expressed in this book are solely of the author and do not represent the opinions/ standings/ thoughts of Publisher.

Printed in India

मेरी कलम से

मौ. सादिक

लेखक के बारे में

मौ. सादिक़ झाड़शुगुडा के एक छोटे शहर बेलपहाड़ में पैदा हुआ (उडीशा)। जिसे मन्दिरों का शहर भी बोला जाता है। यह एक लेखक के साथ साथ अच्छे खिलाड़ी भी हैं, अपने खेल के ज़रिये उन्होंने अपने स्कूल को राष्ट्रीय स्तर तक भी पहुँचाया है। दसवीं कक्षा तक उडीशा में पढ़ने के बाद उनकी क़िस्मत और उनकी महनत और लगन ने उन्हें अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय में पढ़ने का मौक़ा दिया।

अलीगढ़ विश्वविद्यालय से बारवीं कक्षा पास करने के बाद अब वह एक अच्छा डाक्टर बनकर दूसरों की मदद करना चाहते हैं।

लेखक बहुत शांत स्वभाव के इन्सान हैं, उन्हें दूसरों की मदद करके खुशी प्राप्त होती है। लेखक इस किताब में अपनी विचार और भावनाओं को इस तरह से प्रकट किये हैं कि इससे पढ़ने वाले को आनन्द प्राप्त हो। इसके लिये इन्होंने दिल से प्रयास किया है। पुस्तक "मेरी क़लम से" निशिचित रुप से आप लोगों के दिलों को स्पर्श करेगी।..... /S/

मन से.....

यह किताब चुनने के लिये मैं पाठकों का आभार व्यक्त करता हूँ और इस किताब को पूरा करने में मेरी मदद करने वालों का सबसे पहले धन्यवाद कहना चाहता हूँ। सबसे पहले तो मैं अपने दोस्त पारुशी (चीत्रकार), निधि और हरप्रीत का शुक्रिया अदा करना चाहता हूँ जिन्होंने मेरी सहायता इस पुस्तक को पूरा करने में की और पूरे दिल से धन्यवाद मेरे दोस्त राहुल और मेरी प्यारी बहन फरहाना का जिन्होंने हमेशा मेरा आत्माबल बढ़ाया।

और यह पुस्तक अधूरी होगी अगर मैंने अपने माता पिता को धन्यवाद न किया तो जिनके मेहनत प्यार और आर्शीवाद के बिना कुछ भी कर पाना व्यर्थ था।

/S/

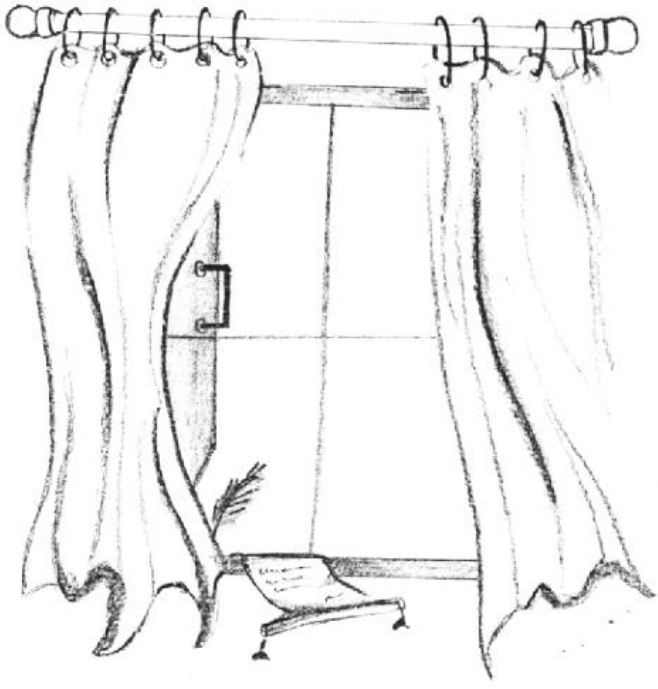

1. ''हवा और तेरी याद''
2. ''थोड़ा वक्त लग गया''
3. ''मैं एक परिंदा''
4. ''खुदा और उसकी खुदाई''

5. ''मेरी कहानी''
6. ''जमाना''
7. ''वक्त''

8. ''इंतजार''
9. **"दूर ही सही भुला न देना"**
10. 'जिन्दगी एक रास्ता''
11. ''जी लू की जिन्दगी कुछ बाकी है''

हवा और तेरी याद

आज हवा चली तो तेरी याद आयी
आज हवा चली तो तेरी याद आयी
संग अपने कुछ बीते हुए पल ले आयी
जिन पलों से मै भागता राह दूर
आज वो ही मुझसे आकर है टकराई
आज हवा चली तो तेरी याद आयी,

तुम तो थे दूर पर फिर भी तुम्हारी
मौजूदगी आस् पास कही नजर आयी,
तुम तो थे दूर पर फिर भी तुम्हारी
मौजूदगी आस् पास कही नजर आयी,
दिल बेचौन हो उठा धड़कन थम गयी,
अज हवा चली तो तेरी याद आयी

आँखों में नामी तो आयी
पर लवो से मुस्कान भी टकराई
आँखों में नाम तो आयी
पर लवो से मुस्कान भी टकराए
ऐ हवा जा कैह् दे उनसे हा
हमें भी उनकी याद है आयी
अज हवा चली तो तेरी याद आयी

थोड़ा वक्त लग गया

लत लग गई थी हमे तेरी चाहत कि,
छुड़ाने में थोड़ा वक्त लग गया
माँगी थी मैंने उस खुदा से तुझको,
पर शायद मेरी दुआ को उस तक
पहुँचने मैं वक्त लग गया

पता है तड़पता है ये दिल तेरी यादों से,
पर उन यादों को अपने ख्यालो से
निकलने में थोड़ा वक्त लग गया
इस दिल को बस तेरी ही चाहत थी,
पर शायद इस दिल के जज्बातो को तुझे
समझाने में थोड़ा वक्त लग गया

तेरे दिल कि तलाश में अपने धड़कनों को भूल गए थे,
उसकी आवाज पहचानने में थोड़ा वक्त लग गया
प्यार का नाम तो बहुत सुना था,
पर ये प्यार होता क्या है उसे पहचानने में
थोड़ा वक्त लग गया।

मै एक परिंदा

मै एक परिंदा उड़ना चाहा पर उड़ ना पाया
आसमानो से दोस्ती करना चाहा पर कर ना पाया
बहते रहे हवा पर उनके संग चल ना पाया

अकसर आवाज देती थी घटा पर मै सुन ना पाया
पंख निकलते पर काट दिए जाते
उड़ने कि ख्वाहिश तो थी
पर कभी उन ख्वाहिशो को जी ना पाया
मै एक परिंदा उड़ाना चाहा पर उड ना पाया

बेरहमी कि हदें पार कि थी किसी ने,
मेरे हर ख़्वाहिश को तबाह कि थी उसी ने
बस एक छोटी शी चाहत थी कि उड़ान भरु मै भी,
पर किसी कि नादानियो की वजह से

अपनी चाहतों से चाहत कर ना पाया
मै एक परिंदा उड़ना चाहा पर उड ना पाया

आज भी जब देखता हूँ आसमानो को
तो तरसता हूँ उन्हें पाने को
जी चाहता है गले से लगा लु,
सबसे दूर होकर इन
रंगीन फिजाओ को अपना लु

यु तो रह गए है कुछ सपने आधुरे
चाहता तो था उन सपनों को पुरा करना...
फिर भी कर ना पाया,
मै एक परिंदा उड़ना चाहा पर उड ना पाया.

खुदा और उसकी खुदाई

खुदा कैसी है तेरी खुदाई
खुदा कैसी है तेरी खुदाई
माना तूने है सबको बनाई...
फिर भी ये तेरे बन्दे क्यूँ करते है तेरी नाफरमाई
दिखा दे तू इनको अज नेकि के रास्ते
वरना एक दिन ये बन जायेंगे हरजाई
खुदा कैसी है तेरी खुदाई

जीते है सब बन कर महान
मानो भूल रहे है अखिरत का अंजाम
जिने कि ख्वाहिश है सभी को
पर मरना तो है एक ना एक दिन हर किसी को

माना जिंदगी बहुत हसीन है,
पर मौत भी तो हर किसी का नसीब है
फिर भी क्यूँ नही समझते ये तेरी दी हुई सच्चाई
खुदा कैसी है तेरी खुदाई

मेरी कलम से

The Poet is on the way to deliver something that everyone has a feeling about. He praises the time as to inspect all in heart. The words are simple understandable to all, making the feeling reachable to all souls.

You may reach author at:
sadik.md98@gmail.com

FSP
FSP MEDIA PUBLICATIONS

BOOK AVAILABLE
Flipkart
GET IT ON Google Play
amazon
amazonkindle

EBOOK AVAILABLE

ISBN 978-93-6024-885-5
9 789360 268855